

16 अप्रैल 2021 के दैनिक जागरण में प्रकाशित संवत्सर विषयक खबर को लेकर सोशल मीडिया पर घमासान मचा हुआ है तथा शास्त्रीय विषय पर भी कुछ लोग आनंद के पक्ष में तो कुछ राक्षस नामक संवत्सर के पक्ष में खड़े होकर राजनीतिक पार्टियों की तरह अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं इसमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें सिद्धांत और प्रविधि का अच्छा ज्ञान है परन्तु वे सबकुछ समझते हुए भी अनावश्यक तो कुछ लोग कुछ भी नहीं समझते हुए केवल दूसरे के विषयों को फारवर्ड करके अपने आपको महत्वपूर्ण और जागरूक साबित करते हुए उत्सव मना रहे हैं। परन्तु काशी विद्वत परिषद का व्यक्तिगत समर्थन या विरोध न तो किसी पंचांग या परंपरा से है और न ही किसी व्यक्ति विशेष से, परिषद का तो सिर्फ समर्थन है उस परंपरा को जो भारतीय ज्योतिष शास्त्र के बताए हुए नियमों का अनुपालन करता है और पंचांग परम्परा में कालांतर जन्य प्रभाव से समागत त्रुटि के संशोधन का आदेश देता है। अस्तु।

प्रस्तुत प्रसंग में सबसे पहले तो हमें यह जानना चाहिए कि पंचांग निर्माण की प्रक्रिया क्या है तथा पंचांग से संबंधित विषय संवत्सर या अधिक मास इत्यादि का निर्णय कैसे किया जाता है पंचांग प्रक्रिया के मूलाधार सिद्धांत ग्रंथ है जिनमें पठित नियमों की सहायता से पंचांग निर्माण होता है। परन्तु सिद्धांत प्रविधि के कठिन एवं श्रम साध्य होने से करण ग्रंथों की परंपरा आरंभ हुई जिसमें कुछ सरल नियमों के द्वारा पंचांग साधन की विधि वर्णित होती है। परन्तु ये करण ग्रंथ भी अपने निर्माण कालो में सिद्धांत ग्रंथों से भी अच्छे परिणाम देते हैं क्योंकि सिद्धांतों में समागत कालांतर दोष का निवारण करने के बाद वेधविधि से समीक्षापूर्वक ही करण ग्रंथों की निर्माण परंपरा ज्योतिष शास्त्र में दिखाई देती है। करण ग्रंथों की निर्माण परंपरा भी सिद्धांतों की शिथिलता के कारण ही आरंभ हुई जिसका स्पष्ट प्रमाण ग्रहलाघव और केतकी ग्रह गणित में प्राप्त होता है। प्रस्तुत प्रसंग में सर्वमान्य एवं आधुनिकतम सिद्धान्त समर्थित करण ग्रंथ केतकी ग्रह गणित है जिसके ग्रह भारतीय ज्योतिष शास्त्र परम्परा में आज भी सभी सिद्धांतों और करण ग्रंथों से अधिक शुद्ध, स्पष्ट और दृकसिद्ध होते हैं। इसीलिए आज भी सभी प्रतिष्ठित विद्वान जिन्हें सिद्धांत का ज्ञान है वे निर्विवाद रूप में इसकी स्पष्टता और दृकसिद्धता को स्वीकार करते हैं। अतः संवत्सर आनयन में दृकसिद्धता का तात्पर्य केतकी ग्रह गणित आदि पारम्परिक दृकसिद्ध सिद्धान्त पर आधारित स्पष्ट मध्यम ग्रह से है न कि आधुनिक तारा मंडलो के सौजन्य से प्राप्त ग्रह से। अस्तु।

वैसे तो संवत्सर साधन की अनेक विधियां ज्योतिष ग्रंथों में वर्णित हैं परन्तु उनमें से दो विधियां अधिकतर प्रयोग में लाई जाती हैं *प्रथम* और शुद्धतम विधि भगण सहित मध्यम ग्रह का आनयन कर भगण में 12 से गुणा कर वर्तमान स्पष्ट मध्यम गुरु ग्रह की राशि संख्या जोड़कर योगफल में 60 से भाग देने पर शेष विजय आदि संवत्सर प्राप्त होता है *दूसरी प्रविधि* के अंतर्गत संवत्सरावली इत्यादि ग्रंथों में वर्णित है जिनमें संवत्सरावली में ही दो विधि वर्णित है जहाँ दोनों के परिणाम अलग अलग आते

हैं। यहाँ इष्ट शक की सहायता से संवत्सर का आनयन किया जाता है। इष्ट शक से संवत्सर के साधन की प्रक्रिया स्थूल है एवं उस दशा में प्रयोग में लाई जाती है जब ग्रह स्थितियां सामान्य हों परन्तु विशेष ग्रह स्थिति का निर्माण होने की स्थिति में सिद्धांतों में वर्णित प्रथम विधि ही प्रयोग में लाई जाती है परंतु वर्तमान में द्वितीय विधि का ही अधिक प्रचलन बढ़ गया है क्योंकि अधिकतर पंचांग कर्ता मध्यम ग्रह का आनयन ही नहीं करते और पोजीशनल एस्ट्रोनॉमी सेंटर के द्वारा ग्रहों की स्थिति प्राप्त कर सिर्फ उसमें सूर्योदय और देशांतर इत्यादि का संस्कार कर स्पष्ट ग्रह बना देते हैं जिससे मध्यम ग्रह प्राप्त ही नहीं होने की स्थिति में शक संवत् के द्वारा ही संवत्सर साधन की प्रक्रिया शेष रह जाती है और सैद्धांतिक दृष्टि से उस गणित द्वारा लुप्त संवत्सर के आनयन में दोष की संभावना प्रबल हो जाती है तथा लुप्त संवत्सर उन विधियों द्वारा आगत काल से पहले या बाद में भी ग्रह स्थिति के अनुसार हो सकता है। अतः वास्तविक निर्णय के लिए विद्वानों को सिद्धांत का ही आश्रय लेना चाहिए।

प्रस्तुत प्रसंग में दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह है कि पहले का पंचांगकार सिद्धांत का भी ज्ञात होता था और उसे पता होता था कि कालांतर जन्य दोष उपस्थित होने पर सिद्धांत का आश्रय लेकर के किस गणितीय प्रविधि में क्या संस्कार करना है लेकिन वर्तमान में कुछ लोग तो पूर्ण विज्ञ हैं पर कुछ लोगों द्वारा पोजीशनल एस्ट्रोनॉमी सेंटर से डाटा प्राप्त कर पंचांग निर्माण की परंपरा का प्रचलन जोरों पर है और वे अपने आप को दृश्य पंचांगकार बताते हैं जबकि दृक्सिद्ध पंचांग निर्माण की प्रक्रिया हमारे ग्रंथों में भी वर्णित है। अस्तु।

संवत्सर निर्धारण में दो तीन चीजें प्रमुखता से ध्यातव्य है प्रथम बृहस्पति की अपनी मध्यम गति से राशि के भोग द्वारा संवत्सर का निर्धारण होता है अतः मध्यम गति से बृहस्पति के एक राशि भोग काल को ही संवत्सर कहते हैं इसके आनयन के लिए सिद्धांत ग्रंथों में विधियां वर्णित है जिसके अंतर्गत मध्यम ग्रह साधन के समय ही आचार्यों ने संवत्सर का निर्धारण किया है। यह विधि सूर्य सिद्धांत इत्यादि सभी ग्रंथों में वर्णित है इसी को लाघव के रूप में सिर्फ शक संवत् के द्वारा शक संवत् में 22 से गुणा कर 4219 जोड़कर पुनः उसमें 1875 का भाग देने से प्राप्त वर्ष आदि को इष्ट शक की संख्या में जोड़कर 60 से भाग देने से प्राप्त एकादि शेष से गत संवत्सर का मान होता है। इस संवत्सरावली पद्धति के नियम के साथ ही वहीं दूसरी विधि भी वर्णित है जिसमें इष्ट शक में 24 जोड़कर 60 का भाग देने से संवत्सर प्राप्त होता है। परंतु आप सब ज्योतिर्विद दोनों विधियों से गणित करके उसके अन्तर को स्पष्ट रूप में देख सकते हैं।

तीसरी इस विषय में सबसे बड़ी विषमता या देखी जा रही है कि कुछ लोग केवल बृहद्देवज्ञरंजन, मुहूर्त चिंतामणि ज्योतिर्निबंध इत्यादि ग्रंथों का उदाहरण देकर संवत्सर निर्णय देने का प्रयास कर रहे हैं जबकि सैद्धांतिक रूप से स्थिति घटने के बाद धर्मशास्त्र की व्यवस्था लागू होती है न

कि धर्मशास्त्रीय व्यवस्था के अनुरूप ग्रहों का ब्रह्मांड में भ्रमण होता है। धर्म शास्त्रीय व्यवस्थाएं सामान्य स्थिति में लिखी गई होती है जिनका सैद्धांतिक दृष्टि से समायोजन आवश्यक होता है हमारा ज्योतिर्विदों से नम्र निवेदन है कि इधर-उधर की बातों में न जाकर के हमारे सिद्धांतों के द्वारा बताए गए नियमों का आश्रय लेकर यदि शुद्धतम ट्कसिद्ध पद्धति द्वारा आनीत स्पष्ट माध्यम ग्रह से संवत्सर का साधन कर लें तो सारी दुविधा ही समाप्त हो जाएगी। प्रस्तुत प्रसंग में लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ के किसी वरिष्ठ आचार्य के द्वारा ट्कसिद्ध ग्रह की बात की जा रही है जो निश्चित ही विचार योग्य है परंतु ट्कसिद्ध के रूप में हम आधुनिक तारा मंडलो द्वारा प्राप्त गणित को ही आधार न मान बैठे अपितु हमारे जो सूक्ष्म उत्तम गणित के संसाधन है उनका आश्रय लेकर और गणित करें तो ट्कसिद्ध स्पष्ट ग्रह निश्चित ही प्राप्त हो जाएगा स्पष्ट मध्यम ग्रह प्राप्त करने की विधि केतकी ग्रह गणितकार ने स्पष्ट रूप में अपने ग्रंथ में दी है यद्यपि केतकी ग्रह गणित भी करण ग्रंथ है परंतु करण ग्रंथों में इसके द्वारा प्राप्त परिणाम सूक्ष्म होते हैं इसका तात्पर्य यह नहीं की सिद्धांत शिरोमणि सूर्य सिद्धांत इत्यादि ग्रंथ आप्रासंगिक है अपितु इन्हीं सब ग्रंथों के आश्रय से ही केतकी ग्रह गणित जैसे उत्तम परिणाम दायक करण ग्रंथों का निर्माण हो सका है जिसके अनुसार संवत् 2078 के चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन गुरु का स्पष्ट मध्यम मकर के 27 वें अंश पर है अतः सिद्धांत गन्थों में वर्णित विधि से बृहस्पति के मकर राशि में होने के कारण आनंद नाम का ही संवत्सर वर्ष पर्यंत प्रयोग में लाया जाएगा। यद्यपि सूर्य सिद्धांत वर्णित ग्रह साधन प्रक्रिया से संवत् 2078 के चैत्र शुक्लादि में कुंभ राशि का बृहस्पति दिखाई दे रहा है जिससे उनका अपने पंचांग में राक्षस सम्वत्सर लिखना उनकी दृष्टि से उपयुक्त है परंतु ज्योतिष शास्त्र को समझने वाले लोग इस बात को स्पष्ट रूप में जानते हैं कि सूर्य सिद्धांत में कालांतर जन्य प्रभाव से सामागत त्रुटि के संशोधन हेतु संस्कार अपेक्षित हैं जिनको विना संस्कार के यथावत स्वीकार करना **खेटैः स्फुटैरेव फल स्फुटत्वम्** की अवमानना है।

इसी क्रम में एक लेख और भी संज्ञान में आया है जिसमें लिखा गया है कि संवत् 2074 में जब बृहस्पति का 3 राशियों में संचरण हुआ था तभी से श्रीगणेशआपा, विश्व पंचांग एवं अन्नपूर्णा इत्यादि पंचांगकार संवत्सर का लोप करके संवत्सर लिख रहे हैं परंतु हमें भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए और अपने साक्ष को सही कर लेना चाहिए क्यों कि लुप्त संवत्सर की परंपरा का आरंभ काशी के श्रीगणेश आपा पंचांग से संवत् 2072 में आरंभ हुई और उन्होंने अपने पंचांग में स्पष्ट रूप में इसका आधार अपनी गणित प्रविधि को बनाया है। इसके बाद कुछ पंचांग कारों ने 2074 में तो काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्रकाशित होने वाले विश्व पंचांग में 2078 में संवत्सर का लोप किया गया है जोकि उनके अपने सिद्धांतानुसार मध्यम गुरु के मान पर आधारित है क्योंकि सूर्यसिद्धांत के नियमानुसार 2078 के चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मध्यम गुरु कुम्भ के दूसरे अंश पर है। परंतु आप सभी जानते हैं कि जिस गणितीय

अंतर को देखकर गणेश ग्रहलाघवकर एवं बापूदेव केतकर ने संस्कार किया उसकी वर्तमान में क्या स्थिति होगी। अतः इन सब में गणित की स्थूलता ही मुख्य कारण के रूप में प्रदर्शित हो रही है अतः विद्वानों को इन विषयों पर गंभीरता से विचार करते हुए पूर्वाग्रह छोड़कर शास्त्र का आश्रय लेना चाहिए जिससे कि शास्त्र की मर्यादा खंडित ना हो और वृथा विवाद न बढ़े।

इसके अतिरिक्त अभी एक और लेख प्राप्त हुआ है जो श्री देवेन्द्र मिश्र के नाम से है जिन्होंने कुछ पंचांगों का आधार देते हुए राक्षस संवत्सर को सही बताया है मिश्र जी एक पंडित हैं अतः तो हमारा उनसे विनम्र निवेदन है कि फलित के साथ कुछ सिद्धांत ग्रंथों को देख लें तो उनका मत भी शास्त्रानुरूप स्पष्ट हो जाएगा।

अस्तु, परिषद का सभी विद्वानों से विनम्र निवेदन है विवादों से बचते हुए सबको साथ में आकर के गंभीरता से शास्त्र विधि का विचार करते हुए वर्ष पर्यंत शास्त्र सम्मत संवत्सर का ही प्रयोग करना चाहिए।

काशी विद्वत् परिषद
ज्योतिष प्रकोष्ठ